दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा–मद्रास

मई –2009

समय : 10 बजे से 1 बजे तक

दिनांक : 12/05/2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

बी.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषय : हिंदी (अनिवार्य) प्रश्न पत्र:5

शीर्षक : **तुलनात्मक साहित्य**

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

I. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए :3x10=30

1. अमृता प्रीतम की ***तू नहीं आया*** कविता का सारांश लिखिए ।
2. ***शेष प्रश्न*** में चित्रित नारी पात्रों का परिचय दीजिए ।
3. सीताकांत महापात्र की ***दादी माँ*** कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए ।
4. भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीयता पर विचार कीजिए ।
5. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की क्या भूमिका होती है ? समझाइए ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***पांच*** के उत्तर लगभग 250 शब्दों में लिखिए : 5x7=35

1. तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के संदर्भ में समाज शास्त्र की भूमिका पर विचार कीजिए ।
2. व्यतिरेकी विश्लेषण से क्या तात्पर्य है ? व्यतिरेकी विश्लेषण के प्रमुख आधारों का परिचय दीजिए ।
3. **गुणों की तुलना** किस प्रकार की जाती है ? उदाहरण सहित समझाइए ।
4. भारतीय साहित्य की परिभाषा देते हुए उसका परिचय दीजिए ।
5. तुलनात्मक साहित्य और व्याकरण– पर टिप्पणी लिखिए ।
6. **शेष प्रश्न** उपन्यास का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

III. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 2x5=10

1.
माचिस की डिबिया–सी बस
सलाइयों से ठूंसे लोग
ऊबड़–खाबड़ रास्ता, फिर महानदी तक डोंगी
झुकते बादल, झिपझिप बारिश
कीड़े–कंकड़ों से भरी सकरी मेंड़
यह सब पारकर पहुंचने के समय–झुटपुटा
वह कहती थी,
हमारे गांव
यमराज तक देर से पहुंचता है

P.T.O

अथवा

कविता कोई पत्थर नहीं है
कि आप मारे
और सामने वाला हाथ ऊँचा कर दे
साफा उतारे
और आप के पैरों में
रख दे ।
कविता का असर
तन पर नहीं
मन पर होता है

2. संसार केवल अपने को लेकर ही नहीं चलता । ऐसा होता तो सारे झंझट मिट जाते । यहाँ और भी दस आदमी रहते हैं । इनकी इच्छा–अनिच्छा भी, उनके काम की धारा भी हमारे शरीर से आकर टकराती है । इसी से अंतिम परिणाम अगर मन के अनुकूल न हो तो धिक्कार देते रहना अपना ही अपमान करना है । अपने प्रति इससे बढ़कर अविश्वासी और क्या हो सकता है?

अथवा

जैसे नारी का प्रेम हृदय को आच्छादित कर देता है वैसे ही उसके रूप का मोह बुद्धि–विवेक को हर लेता है । तुम जानती थी कि यह मेरा प्रेम नहीं, क्षणिक मोह है । फिर तुमने इसे बढ़ावा क्यों दिया ? कुहरा चाहे जितने अंधकार से सूर्य को ढंक ले लेकिन फिर भी वह असत्य है । अमिट सत्य तो सूर्य ही है ।

******